

Q. Trace the development and growth of Sino-Tibetan Literature.

Sino-Tibetan literature is the literary work of the people of the Sino-Tibetan family. It is a vast and diverse literature that has developed over centuries in various parts of the world. The literature of this family is characterized by its rich oral tradition and its deep roots in the cultures of the peoples who speak these languages. The development of Sino-Tibetan literature can be traced back to the early days of the human race, when the first stories and songs were passed down from generation to generation. Over time, these oral traditions evolved into written forms, and the literature of this family grew and diversified. The literature of the Sino-Tibetan family is not only a reflection of the lives and experiences of its people, but it is also a testament to their creativity and imagination. It is a literature that has stood the test of time and continues to inspire and captivate readers around the world.

The development of Sino-Tibetan literature is a complex process that has been shaped by a variety of factors, including social, cultural, and political changes. One of the most important factors in the development of this literature is the oral tradition. In many Sino-Tibetan cultures, the oral tradition is the primary means of transmitting knowledge and values. This tradition has led to the development of a rich and diverse body of oral literature, including epic poems, ballads, and folk songs. The oral tradition has also played a key role in the development of written literature, as many of the stories and songs that were first told orally were later written down. The written literature of the Sino-Tibetan family is a reflection of the oral tradition, and it has often been used to preserve and transmit the stories and values of the oral tradition.

Another important factor in the development of Sino-Tibetan literature is the influence of other literatures. The literature of the Sino-Tibetan family has been influenced by the literatures of other cultures, particularly the literatures of the Indian and Chinese worlds. The influence of Indian literature is particularly evident in the development of the Buddhist literature of the Sino-Tibetan family. The Buddhist literature of the Sino-Tibetan family is a vast and diverse body of literature that has played a central role in the development of the Sino-Tibetan world. The influence of Chinese literature is also evident in the development of the Chinese literature of the Sino-Tibetan family. The Chinese literature of the Sino-Tibetan family is a rich and diverse body of literature that has played a central role in the development of the Chinese world.

The development of Sino-Tibetan literature is a process that has been shaped by a variety of factors, and it is a process that continues to this day. The literature of the Sino-Tibetan family is a reflection of the lives and experiences of its people, and it is a literature that has stood the test of time. It is a literature that has inspired and captivated readers around the world, and it is a literature that will continue to do so for many years to come.

अतः गेक है। महाभारत का भी अनुवाद जय में चर्मपत्र के समय में हुआ। आदि पर्व, विराट पर्व और भीष्मपर्व निम्न रूप से बरी सम्राट के समय में लिखे गये, किन्तु आश्वमेध पर्व, गौतमपर्व, प्राख्यानिक पर्व और स्वर्गरोहन पर्व बाद के समय के हैं। उद्योग पर्व की रचना अशुभ संस्कृत में है और विराट पर्व चर्मपत्र तथा उसके साम्राज्य के नष्ट होने से १० वर्ष पहले १०६ ई० में लिखा गया। महाभारत की कथा के आधार पर जावा में अन्य ग्रंथ भी लिखे गये जो उच्चकोटि के हैं। इनमें 'अर्जुन विवाह' नामक ग्रंथ हैरलंग (१०१८-१०४२) की संस्कृत में म्पु वणव द्वारा लिखा गया। काडिरी राज्यकाल में विगुण द्वारा कृष्णापन की रचना हुई जिसमें कृष्ण द्वारा स्वकर्मिणी के हरण तथा शरासन्ध के साथ युद्ध का उल्लेख है। पत्तरम के मंदिर में इसी विषय को लेकर कई चित्र भी डाले हैं। दूसरा ग्रंथ 'सुमन ^{सान्तक} ~~सामक~~' दशरथ के पिता उजाकी रानी इन्द्रमती की पुण्य द्वारा हृत्पु पर आधारित है जिसका उल्लेख जालिदास ने अपने रघुवंश में किया है। इस ग्रंथ की रचना म्पु नमोनेगुण ने की थी और इसमें श्री वर्जय का उल्लेख है श्रीम के मतानुसार इन दोनों ग्रंथों की रचना १२वीं शताब्दी में हुई थी।

महाभारत के उद्योग, भीष्म, द्रोण कर्ण और शल्यपर्वों पर आधारित भारत युद्ध नामक ग्रंथ की रचना जयमय (११३५-११६५) ई० के समय में हुई थी। उसका लेखक म्पु सैषैड था। इस ग्रंथ में बहुत सी स्व्यानीय कथाओं का मिश्रण भी है और उसकी म्पु पनु लुट्ट ने किया था। इसी लेखक ने हरिवंश तथा चर्यौत्वकचाम्य भी उसी समय लिखा। प्रथम ग्रंथ में स्वकर्मि हरण और शरासन्ध युद्ध का उल्लेख है और इससे में क्मि सुन्दरी के लिए चर्यौत्वकचाम्य की सहायता से अमिमन्थु द्वारा लक्ष्मण लुगार के साथ युद्ध करने का उल्लेख है। इसी कथा

पर आधारित कथाओं कृत्य की कई कथाएँ भी प्रचलित हैं।

कामेश्वर द्वितीय (1185) ई० के समय संभरदहन की रचना हुई, जिसका आधार जालिदार या कुमारसम्भर का शायण के रचयिता योगेश्वर के कवचित्त धर्मत्र और तनकुंग नामक दो पुत्र थे, जिनमें से प्रथम लुण्ठक और 'वृत्रसंचय' नामक पद्य कालों का रचयिता था। प्रथम ग्रंथ भिवरात्रि पर आधारित है और दूसरा संस्कृत कव्य शास्त्र के सम्बन्ध रखता है। कामेश्वर द्वितीय के समय में 'मौमकाण्य' की भी रचना हुई। इसमें प्रव्वीपुत्र मोच अववा नरक द्वारा बृहत्वाञ्जय देवताओं की पराजय और अंत में कृष्ण के हाथों उसकी हृत्य का उल्लेख है। 93 की 'मताण्डी के ग्रंथों में 'कवचित्त कृष्णान्तक' भी है। जिसमें कृष्ण वध के अंत की कथा है।

98 ई० मताण्डी में मजपाहित राज्य का उदीयमान युग था और इसमें प्रपंच द्वारा नांगरकृतागम की रचना 1365 ई० में हुई। यही मजपाहित शासक दृष्यम बुसक की जीवन चरणाओं पर आधारित है प्रपंच ने अपने समकालीनों में लौह लेखक मृतन्कुल का भी उल्लेख किया है। इसमें अर्जुन सहस्रनाहु तथा सुतसामे अववा 'पुरुषाकशान्त' काव्यों की रचना की। इसके काव्य में सुतसोम और पुरुषाक राक्षस के बीच युद्ध का उल्लेख है और जीव तथा वैद्य काव्यों के बीच युद्ध भी अन्तर में ही रखा गया है। उपयुक्त काव्य प्रायः भारतीय लिपियों को लेकर लिखे जाये। इनके अतिरिक्त और काव्य गिनकी विधि नहीं निर्धारित की जा सकती है। निम्नलिखित वे इन्द्रविजय, जिसमें वृत्र की विजय तथा मृत्यु और नक्षत्र का बोधे समय के लिए इन्द्र होना परिचित है। पावयरा जिसमें अर्जुन के तप द्वारा शिव से अस्त्र प्राप्त करने का उल्लेख है। विद्वान्दत्त, प्रथम्य हरिविजय जिसमें मन्दर पर्वत की गमानी से समुद्र

गन्धर्व का विवरण है। 'कालयवननाटक' जिसमें कंस के वध का वदना लेने के लिए कालयवन का द्वारका पर आक्रमण, युधामन्यु द्वारा उसका मरम लेना और अर्जुन द्वारा युधामन्यु के हरण की कथा है तथा रामविजय, रत्न विजय, पारिविजय इत्यादि काव्य ग्रंथ हैं।

इन पौराणिक तथा धार्मिक ग्रंथों के आतिरेक 'धर्मभूय' 'धर्मसंपित' 'चण्डकिरन' 'व्रतसंचय' तथा कृतयन और नीतिभारत — कविमप्रसिद्ध कालकी रचनाएँ हैं। नीतिभारत कविन में नीतिसार, पंचतंत्र, चाणक्यनाटक इत्यादि के श्लोकों का संकलन है। अनुभासुनपर्व पर आधारित 'सर्वसमुच्चय' में धर्मनुभासुनो का संग्रह है। वाल्मीकि के ग्रंथ 'जवरायि' में भीम के पराक्रम की कथाओं का उल्लेख है। पुराणों में ब्रह्माण्ड पुराण सबसे प्रमुख है और भारतीय ग्रंथों की माँति है। अगस्त्य में ऋषि द्वारा अपने पुत्र हृद्दृश्य को संसार की रचना का उल्लेख सुनाया गया है।

मध्य जावा का साहित्य भी विरहृत है। वहाँ इस काल के ऐतिहासिक ग्रंथ जय तथा पद्य में लिखे गये। पद्यों में किडुंग नामक छंद का प्रयोग किया गया। अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों में 'पररती' सबसे प्रसिद्ध है जिसमें जावा के सिंहसारी और मजपहित कालों का इतिहास दिया गया है। इसकी रचना 163 ई० में हुई। 'उसनजव' नामक ग्रंथ में वाल्मीकि के इतिहास से सम्बंधित बहुत सी रचनाएँ हैं। हितो पदिका और पंचतंत्र पर आधारित बहुत सी कथाएँ भी जावा के ऐतिहासिक साहित्य में मिलती हैं। इस प्रकार का साहित्य जावा के आतिरेक वाल्मीकियाम और लाओस की भाषाओं में भी है। किडुंग छंद वाले 'संगसत्यवान' में सावित्री के जीवन का प्रसिद्ध घटना का विवरण है।

धार्मिक जावानी साहित्य के अन्तर्गत भारत से आयीं मूल रचनाओं उनके अनुवाद तथा संस्कृत

रूप से जावानी-धार्मिक ग्रंथों को रखा जा सकता है।
 चतुर्वेद से 'नाशयणावर्कभीषोपनिषद्' का संकेत है जो वास्तव में प्रचलित है। वेद पारिक्रम सार संहिता किरण में हीनिक उपासना सम्बन्धी ग्रंथों का संकलन है। स्त्रोतों में त्रिवेदा, विष्णु, ब्रह्म, सूर्य, वायु, वरुणा, तथा यम की प्रार्थना की जाती है। तुल्यदेव में कुछ कर्मशास्त्र सम्बन्धी ग्रंथ हैं। आध्यात्मिक जीवनवित्तों के लिए बहुत से ग्रंथों का संकलन भी किया गया। मूल धार्मिक संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद में भुवनकोश, भुवन-संक्षेप, तत्त्वसंग, हयग्रीव महाब्रह्म एवं कार्त्तिकेय ग्रंथ दृष्ट्यपत्ति तत्व, जिसमें बहुत से धर्मों का उल्लेख इत्यादि हैं। ये ग्रंथ मूल संस्कृत के अनुवाद किये हुए हैं। स्वतन्त्र रूप से लिखित जावानी ग्रंथों में सप्तभुवन, लक्ष्मिमाता देवशासन हैं।

उपयुक्त बृहन्न से प्रतीत होता है कि जावा का प्राचीन साहित्य भारतीय ग्रंथों के मूल रूप उनके अनुवाद तथा स्वतन्त्र रचनाओं से ओत प्रोत है। यह साहित्य धार्मिक लौकिक न्याय तथा अन्य विषयों से सम्बन्धित है। मलाया में मुसलमान पाल रहे हैं की रचनाओं का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। पर बाद के समय में भी भारतीय साहित्य पर आधारित रचनाएँ हुईं जिनमें महाभारत तथा रामायण की कथाएँ ली जाती हैं।

जावा तथा मलाया के प्राचीन भासु, संस्कृत तथा बौद्धिक क्षेत्रों में भारतीय अंग्रहान पूर्ण रूप से मिलता और इसकी दृष्टि हिन्दुओं के राज्यकाल तक ही सीमित नहीं रही। इस्लामी व्यापारियों ने वेद के अपने धर्म के रंग पर भारतीय संस्कृतिक परमपरा को वहाँ के निवासियों के जीवन से अलग करने में सफल न हुए। यह परमपरा धार्मिक क्षेत्र में भी कायम रही।